श्रीकृष्ण का जन्म और विलक्षण जीवन

आजकल नेताओं तथा 'महात्माओं' के जन्मदिन मनाने का काफी रिवाज है। आये दिन भारत में कभी विवेकानन्द जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी गांधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी राष्ट्रपति जी का जन्मदिन और कभी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर आप विचार करेंगे तो देखेंगे कि इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये हैं और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनों क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। यदि मिल भी जाये तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा। परन्तु श्रीकृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' के नाम से मानाते हैं, के जीवन में आपको यही विलक्षणता स्पष्ट रूप से देखने को मिलेगी। श्रीकृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त महान धार्मिक व्यक्ति भी थे और उन्हें राजनीतिक पदवी, प्रशासनिक कुशलता भी प्राप्त थी। अत: श्रीकृष्ण अपने चित्रों तथा मंदिरों में सदैव प्रभामण्डल (प्रकाश के ताज) से सुशोभित तथा रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखाई देते हैं। इसलिए मालूम रहे कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनीतिक दोनों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्रीकृष्ण देवता की याद दिलाता है। आये दिन राजनीतिक नेताओं का जन्म-दिन मानाया जाता है, वे प्राय: रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से सुसज्जित नहीं हैं, वे 'महाराजाधिराज-श्री' की उपाधि से तथा 'पवित्र-श्री' अथवा 'पूज्य-श्री' की उपाधि से अर्थात् दोनों उपाधियों से युक्त नहीं हैं। अत: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव इस दृष्टिकोण से अनुपमेय है क्योंकि श्रीकृष्ण को तो भारत के राजा भी पूजते हैं और महात्मा भी महान् एवं पूज्य मानते हैं।

श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे - इस प्रसंग में ध्यान देने के योग्य एक बात यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्म-दिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान् नहीं थे। उदाहरण के तौर पर विवेकानन्द संन्यास के बाद ही महान् माने गये। महात्मा गांधी प्रौढ़ अवस्था में ही एक राजनीतिक नेता अथवा एक संत के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्रीकृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और वे जन्म से ही पूज्य पदवी को प्राप्त थे। आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से सुशोभित देखते होंगे। उनकी बाल्यावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणि-जड़ित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते हैं। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएं पालने या पंगूरे में श्रीकृष्ण की किशोरावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधि रूप में बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की झांकियां लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। अन्य किसी भी प्रसिद्ध व्यक्ति को इस प्रकार जन्म से ही प्रभामण्डल से युक्त चित्रित नहीं किया जाता है।

श्रीकृष्ण 16 कला सम्पूर्ण और सुंदर थे - यह भी एक सत्य तथ्य है कि अन्य जिन व्यक्तियों की जयन्तियां मनाई जाती हैं, वे 16 कला सम्पूर्ण नहीं थे। केवल श्रीकृष्ण ही सोलह कला सम्पूर्ण देवता हुए हैं। श्रीकृष्ण में शारीरिक आरोग्यता और सुन्दरता की, आत्मिक बल और पवित्रता की तथा दिव्य गुणों की अत्यन्त पराकाष्ठा थी। मनुष्य-चोले में जो सर्वोत्तम जन्म हो सकता है, वह उनका था। अन्य कोई भी व्यक्ति शारीरिक या आत्मिक दोनों दृष्टिकोणों से इतना सुन्दर, आकर्षक, प्रभावशाली और प्रभुत्वशाली नहीं हुआ। सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त पर्यन्त अन्य कोई भी इतना महान् न हुआ है और न हो सकता है। श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना महान् और आकर्षक था कि यदि आज भी वह इस पृथ्वी पर कुछ देर के लिए प्रगट हो जाये तो क्या हिन्दु, क्या मुसलमान, क्या ईसाई, क्या यहूदी, सभी उनके सामने नत-मस्तक हो जायेंगे और मुग्ध होकर उनकी छवि निहारते खड़े रहेंगे।

श्रीकृष्ण इतने महान् कैसे बनें? - अब प्रश्न उठता है कि जबकि श्रीकृष्ण जन्म से ही महान् थे तो अवश्य ही उन्होंने पूर्व जन्म में कोई महान् पुरुषार्थ किया होगा। लोगों में एक छन्द भी प्रसिद्ध है जिसका अर्थ यह है कि 'हे राधे तुमने कौन-सा ऐसा पुरुषार्थ किया था कि जिससे वैकुण्ठ नाथ श्रीकृष्ण तुम्हारे अधीन हो गये? तो जो बात राधे के बारे में प्रष्टव्य है, वही श्रीकृष्ण के बारे में पूछी जा सकती है कि 'वह कौन-सा सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ था जिससे कि उन्होंने उस सर्वश्रेष्ठ देव पद को तथा राज्य-भाग्य को प्राप्त किया?'

श्रीमद्भगवत में लिखा है कि श्रीकृष्ण योगीराज थे, वह योगाभ्यास किया करते थे। परन्तु सोचने की बात है कि योगाभ्यास या अन्य कोई पुरुषार्थ तो किसी अप्राप्त सिद्धि की प्राप्ति के लिए ही किया जाता है, परन्तु श्रीकृष्ण तो पूर्णत: तृप्त थे क्योंकि उन्हें धर्म, धन और जीवनमुक्ति सभी श्रेष्ठ फल प्राप्त थे, सोलह कला सम्पूर्ण देवपद से भला और क्या उच्च प्राप्ति हो सकती थी कि जिसके लिए श्रीकृष्ण योगाभ्यास करते? श्रीकृष्ण के जीवन में तो किसी दिव्य गुण की, आत्मिक पवित्रता या शक्ति की या श्रेष्ठ भाग्य के अन्तर्गत गिनी जाने वाली अन्य किसी वस्तु, भोग्य, आयुष्य आदि की कमी नहीं थी कि जिसकी प्राप्ति के लिए वह योगाभ्यास करते। अतएव विवेक द्वारा तथा ईश्वरीय महावाक्यों द्वारा स्पष्ट है कि वास्तव में श्रीकृष्ण ने अपने पूर्व जन्म में अर्थात् श्रीकृष्ण पद प्राप्त होने से पहले वाले जन्म में योगाभ्यास किया था। जिसके फलस्वरूप उन्हें स्वस्थ एवं सर्वांग सुन्दर तन, अति निर्मल मन (संस्कार), अतुल धन और अनुपमेय सम्मान प्राप्त हुआ। तन, धन, प्रकाश का ताज - ये भी तो कर्म और संस्कार अथवा 'पुरुषार्थानुसार' ही प्राप्त होते हैं। कहावत भी है कि 'पुरुषार्थ द्वारा नर श्री नारायण और नारी श्री लक्ष्मी के समान बन सकती है।' तो स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण, जिनका एक नाम 'श्री नारायण' भी है, पूर्व जन्म में नर होंगे और उन्होंने ऐसा उत्तम पुरुषार्थ किया होगा कि अगला जन्म उन्हें श्री नारायण अर्थात् श्रीकृष्ण रूप में प्राप्त हुआ। उन्होंने पूर्व जन्म में विकारों का सम्पूर्ण संन्यास किया होगा तभी वे इस जन्म में बचपन से ही निर्विकारी कहलाये। उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज योग द्वारा अभ्यास करके आत्मा के प्रकाश की कलाओं को बढ़ाया होगा, तभी तो वे '16 कला सम्पूर्ण देवता' कहलाये। घर-गृहस्थ में रहते हुए उन्होंने विकारों पर विजय प्राप्त की होगी तभी तो आज ''बोल श्रीकृष्ण महाराज की जय!'' - इस प्रकार लोग उनका जयघोष करते हैं।

पटना। बिहार के राज्यपाल देवानंद कुन्वार को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.संगीता बहन एवं ब्र.कु.अनीता बहन।

पंणजी, गोवा। 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं मुख्यमंत्री मनोहर परीकर, ब्र.कु.सुरेखा बहन, ब्र.कु.वनीता बहन एवं अन्य मंत्री तथा विधायक।

काठमाण्डू, नेपाल। उप प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री विजय कुमार गच्छेदार को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.किरण बहन।

जयपुर, ढेहर के बालाजी। केनरा बैंक के मैनेजर आई.डी.गोयल को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.अनामिका बहन एवं ब्र.कु.शीतल।

मोहाली। डिप्यूटी कमिश्नर वरूण रूजम को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.प्रेमलता बहन।

सामाना। एस.डी.एम. सुखबिन्द्र सिंह गिल को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ममता बहन।